उर्दू में विज्ञान का लोकप्रियकरण

डॉ. इरफाना बेगम

विज्ञान को उर्दू भाषी लोगों में लोकप्रिय करने के लिए विज्ञान प्रसार एवं मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं सेमीनार का आयोजन 9 से 11 अप्रैल के बीच किया गया। कार्यक्रम का विषय था प्रिंट माध्यम से उर्दू में विज्ञान लोकप्रियकरण। उक्त कार्यशाला का उद्घाटन मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्याालय के प्रथम कुलपति एवं विख्यात वैज्ञानिक प्रोफेसर शमीम जयराजपुरी ने किया। कार्यशाला में जम्मू-काश्मीर, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के प्रतिभागियों ने भाग किया।

विज्ञान प्रसार ने वर्ष 2010 से रीचिंग दी अनरीच्ड कार्यक्रम प्रारंभ किया था जिसके तहत विभिन्न भारतीय भाषाओं में लोकप्रिय विज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित करने एवं विभिन्न दैनिक एवं मासिक पत्रों के माध्यम से विज्ञान लोकप्रियकरण का कार्य किया जा रहा है। इस सेमीनार एवं कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य भी यही था कि विख्यात वैज्ञानिकों के परामर्श से नए रचनाकारों में बेहतर लेखन कौशल का विकास हो सके।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. इरफान एस. हबीब ने उर्दू में विज्ञान लेखन एवं उर्दू विज्ञान साहित्य के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एक समय सारा साहित्य उर्दू में ही होता था। आजकल ऐसा नहीं है यह तो नहीं कहा जा सकता कि उर्दू पढ़ने वालों की कमी है लेकिन उर्दू में लोकप्रिय विज्ञान साहित्य की कमी है और यह बहुत रुचिकर भी नहीं है। इसलिए विज्ञान साहित्य की रचना ही नहीं, उसे रुचिकर बनाना भी आवश्यक है।

डॉ. टी.वी. वेंकटेश्वरन ने कहा कि ज़रूरी नहीं है कि सभी लोग विज्ञान पढ़ें लेकिन यह ज़रूरी है कि लोगों में वैज्ञानिक चेतना का विकास हो। उसके लिए बेहतर प्रयास की ज़रूरत है जिसमें सिर्फ भारत की संवैधानिक भाषाएं में ही नहीं बल्कि उन सभी क्षेत्रीय भाषाओं में काम करना होगा जो हमारे देश में उपयोग की जाती हैं।

कार्यक्रम में प्रस्तुत परचों के सारांश की पुस्तिका *तलखीस* का विमोचन मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर मोहम्मद मियां ने किया। इसमें विषय वस्तु तैयार करने, अनुभवों की साझेदारी, पढ़ने में रुचि पैदा करने और प्रचार-प्रसार विषयों पर परचों के सारांश शामिल हैं। अपने वक्तव्य में प्रोफेसर मोहम्मद मियां ने कहा कि उर्दू में विज्ञान लेखन एक नई शुरुआत है। इसमें मुश्किलें तो बहुत होंगी लेकिन इसकी शुरुआत करनी चाहिए और विश्वविद्यालय इसके लिए पूरी मदद करेगा।

कार्यक्रम के एक सत्र में उर्दू में विज्ञान लेखन क्यों और कैसे एवं उर्दू में विज्ञान लेखन सम्बंधी समस्याएं एवं संभावनाओं विषयों पर डॉ. सीमीं रूबाब (एन.आई.टी. श्रीनगर), डॉ. मोनिका कौल (हंसराज कॉलेज दिल्ली) एवं गौहर रज़ा साहब ने प्रतिभागियों के साथ चर्चा की। एक अन्य सत्र में उर्दू में अनुवाद कार्य कैसे हो, अनुवाद कार्य में समस्याएं विषय पर प्रोफेसर ज़फरउद्दीन (फैकल्टी ऑफ लिंगविस्टिक) एवं डॉ. मोहम्मद खालिद मुबशिर उल ज़फर ने अपने वक्तव्य रखे।

इसके पश्चात सभी प्रतिभागियों ने लोकप्रिय विज्ञान के लिए आलेख तैयार किए। इन आलेखों का मूल्यांकन डॉ. सीमीं रूबाब, डॉ. मोनिका कौल, एवं गौहर रज़ा साहब ने किया जिसके आधार पर प्रतिभागियों को अपने आलेखों का स्तर ज्ञात हुआ जो कि उनके लेखन को बेहतर बनाने में सहायक होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***